Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, SEPT-OCT, 2018, VOL- 6/47

गढ़वाल हिमालय के हरियाला पवित्र भूस्थल में सामाजिक–सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्रियाकलापों द्वारा जैवविविधता एवं जंगलों का संरक्षण

रमा मैखुरी[1] & शंकर सिंह[2]

[1]प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल

[2]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल

Abstract

आज समाज जिसे तेजी से आधुनिकता की ओर जा रहा है वही आधुनिकता समाज को विशमांगता की ओर ले जाकर लिए एक चुनौती खड़ी कर रही है, क्योंकि व्यक्ति की भौतिकवादी कगार में खड़ा है। आव" यकता है उसकी रक्षा की। प्रकृति तथा उसमें निहित जेव विविधता इस पृथ्वी की जीवनदायिनी प्रणाली के महत्वपूर्ण घटक हैं। प्रकृति हमारे लिए भोजन, चारा, लकड़ी, औषधि आदि ऐसी प्रत्यक्ष आर्थिक लाभों और सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, प्रेरणात्मक, सौन्दर्यपरक आदि जैसे महत्त्व के अप्रत्यक्ष लाभों का स्रोत है। इसलिए प्रकृति संरक्षण द्वारा पृथ्वी पर मानव अस्तित्व की रक्षा का मंत्र होना चाहिए। अपने सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक–धार्मिक क्रियाकलापों द्वारा हम अपनी इस धरोहर को बचा सकने में सफल हो सकते हैं जिसका एक उदाहरण हरियाली पवित्र भूस्थल में जहाँ आज भी जंगलों एवं जैवविविधिता को धार्मिक धरोहर मान कर उसका उदाहरण किया जा रहा है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भूमिका :–

गढ़वाल हिमालय 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है। यहाँ के विश्व प्रसिद्ध जैसे बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, हेमकुण्ड साहिब आदि स्थल धार्मिक महत्ता के साथ गंगा की अनेक सहायक नदियों के उदगम स्थल भी का पारिस्थितिक तन्त्र भौगोलिक महत्ता के साथ विभिन्न प्रकार जीव–जन्तुओं एवं पेड़–पौधों की प्रजातियों को प्रदर्" ात करता है। यहाँ की जैव विविधता को यहाँ के पारिस्थितिक तन्त्र ने प्राकृतिक रूप से संरक्षण किया हुआ है। इस प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु स्थानीय लोगों ने जैवविविधता से भरपूर क्षेत्र को दैव वन घोषित किया है। जो कि जैवविविधता के संरक्षण हेतु एक अच्छा पारम्परिक प्रयास है। यह पारम्परिक प्रयास ठीक उसी तरह है जिस प्रकार सरकार द्वारा जैवविविधता संरक्षण हेतु राष्ट्रीय पार्क, पशु विहार, अभ्यारण आदि की स्थापना की गयी है। गढ़वाल हिमालय में असंख्य देवस्थल जैसे ताड़के" वर, कोट, नन्दीसैण, पाबौ, चैपड़ो एवं हरियाली आदि है इनमें से प्रसिद्ध हरियाली देव स्थल का विस्तृत अध्ययन मुख्य उद्दे" य को ध्यान में रखते हुए इस भोध पत्र में निम्न प्रकार किया जा रहा है।

गढ़वाल हिमालय में विभिन्न प्रकार की पेड़–पौधों की प्रजातियां पायी जाती है जिनका सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व के हजारों वर्षों से पारम्परिक रूप से संरक्षण किया जाता रहा है। स्थानीय

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

लोगों द्वारा विभिन्न प्रकार की आर्थिक महत्त्व की प्रजातियों का संरक्षण पारिस्थितिक महत्ता को ध्यान में रखते हुए अपने पारम्परिक ज्ञान के द्वारा किया गया है। इस तरह सांस्कृतिक व धार्मिक महत्ता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों का अत्यधिक दोहन होने से रोका जाता है।

हरियाली देव वन :–

हरियाली देव वन चमोली जनपद में बद्रीनाथ राजमार्ग पर गोचर से 32 कि.मी. दूर कोदिमा नाम गांव के ऊपर स्थित है। यह स्थल कोदिमा, जशोली व पाबौ गांवों की सीमा पर स्थित एक पवित्र देव वन है जो कि सांस्कृतिक व धार्मिक दृष्टि से प्रकृति से जुड़ा हुआ है। यह देव वन समुद्र तल से 285 मी0 पर स्थित तथा लगभग 5.5 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला हुआ है। कुछ धार्मिक प्रतिबन्धों के कारण यहाँ पर स्थानीय व बाहरी लोगों का प्रवे" ा करना वर्जित होता था और कारणव" ा इन वनों में प्रवे" ा करना जरूरी होता था तो इसके लिए एक रस्म के मुताबिक विभिन्न गाँवों के लोग वन में सटी सीमा पर स्थित वान्सो, लपवनखाल, काकोटू, हिटजरा आदि स्थान पर अपने जूते इत्यादि उतारकर इस वन क्षेत्र में प्रवे" ा करते थे।

यहाँ के भौगोलिक क्षेत्र $30^{0}13^{0}$ से N और 79^{0} 71 E है। विभिन्न समुदाय के 15 गाँवों, जिनकी जनसंख्या लगभग 600 से अधिक है, डोली यात्रा के साथ भाामिल होकर इस धार्मिक स्थल में जाते है। वर्तमान वन, उत्तराखण्ड विभाग के अधीन है। इस वन में मुख्यतः बाँज, बुंरास प्रजाति के वृक्ष है जिस कारण ये क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। इस वन में थैलिक्ट्रम, स्ट्रोलिन्थस, हेडीकिपग, सिरेनिकम, रिनवर्शिया, चिरयता प्रजाति के वृक्ष पाये जाते हैं।

हरियाली देव वन भारत के अन्य देव वनों में से एक माना जाता है जो कि 5.5 वर्ग कि.मी. क्षेत्र को प्रद" ित करता है। यहाँ विभिन्न प्रकार के वन जैसे बाँज मिश्रित चीड़ वन, मिश्रित बांज–चीड़ वन, दोड़ालिड़, फॉरेस्ट ऑक ओड, लापोनिया, रोड़ाडउन यहाँ देखे जात सकते है।

हरियाली देव की मान्याली देवी की मान्यता के साथ जैवविविधता संरक्षण :–

भागवत पुराण में यह मान्यता है कि देवकी व बसुदेव की सातवीं संतान भगवान कृष्ण के स्थान पर बंदीगृह में लाया गया था जिसे मथुरा के राजा कंस ने दीवार पर पटक कर मारना चाहा लेकिन वह कंस के हाथ से छूटकर अंतध्यान होकर एक प्रकाशपुँज में परिवर्तित होकर देवीरूप धारण कर हरि पर्वत पर चली गयी थी जो हरियाली देवी सिद्धपीठ के नाम से प्रसिद्ध है। मान्यता है कि हरियाली देवी की पूजा गाय के रूप में होती है, इस मान्यता पर स्थानीय लोगों का विश्वास है कि एक ही दिन अचानक शाम के समय एक गाय ने दूध देना बन्द कर दिया। यही क्रम लगातार चलता रहा एक दिन गाय का पीछा किया गया तो, देखा कि गाय एक पत्थर के ऊपर अपना दूध दे रही थी। उसी रात एक व्यक्ति, जिसकी गाय थी, के सपने में भगवान का मायका माना जाता है और दूसरे गाँव कोदिमा, जो हरियाली के उत्तरी पूर्व में है, उसे देवी का ससुराल माना गया है। इन गाँवों की यह जिम्मेदारी है कि

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इस वन क्षेत्र में नियमों का उल्लघंन न हो। मन्दिर के मुख्यतः पुजारी ज" ाोली गांव के मैठाणी जाति के ब्राह्मण हैं। तभी से हरियाली वन क्षेत्रों को धार्मिक संरक्षण देकर इसके अनाव" यक दोहन को रोका गया है तथा स्थानीय लोगों के आपसो सहमति से यहाँ एक भव्य मन्दिर बनाया गया है। महायज्ञ के समय यहाँ स्थानीय लोगों, विभिन्न गाँवों के लोगों द्वारा वेदोंचारण के साथ डोली यात्रा आरम्भ की जाती है। देवी की मूर्ति आधा फिट ऊँची और एक फिट चौड़ी पत्थर पर भोर की सवारी के साथ बनायी गयी है।

मान्यतायें व परम्परायें :–

- महिलाओं को देव वन पवित्र वन में जाने की अनुमति नहीं होती है क्योंकि मासिक धर्म के कारण उन्हें अ" ाुद्ध माना जाता है।
- निम्न जाति के लोगों को कोदिमा गाँव से ऊपर नहीं जाने दिया जाता है।
- इन देव वनों से चारापत्ती व ईंधन की लकड़ी लाना भी प्रतिबंधित किया गया है मान्यता है कि यहाँ की लकड़ी का उपयोग औजार बनाने से देवी उस व्यक्ति या परिवार पर क्रोधित होकर कुपित उसका अहित कर सकती हैं।
- मन्दिर जाते समय रास्ते में सांप दिखने पर यात्री को अपनी यात्रा वहीं पर समाप्त करनी पड़ती है तथा एक सप्ताह के उपरान्त ही वह पूजा हेतु दोबारा यात्रा कर सकता है।
- देववन जाने के एक हफ्ते पहले गाँव वाले प्याज, अण्डा, लहसुन, मीट आदि खाना बन्द कर देते हैं।
- गाँव का दूध हरियाली देवी को चढ़ाया जाता है।

देव वन के सामाजिक–आर्थिक एवं पारिस्थितिकीय नियमः–

स्थानीय किसान विभिन्न प्रकार की पारम्परिक फसलों का उत्पादन करते हैं जिनमें अनाज, कोदा, झंगोरा, दालें इत्यादि और स्थानीय निवासी अपनी दैनिक आव" यकता हेतु जलावनी लकड़ी, चारापत्ती, इमारती लकड़ी और अकार्बनिक खाद हेतु पत्तियों के लिए वनों पर निर्भर रहते हैं।

प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग व रखरखाव की जिम्मेदारी केवल दो स्थानीय गाँवों को ही दी गयी है बाकि अन्य गाँवों के लोग इस वन तक प्रवेश नहीं कर सकते हैं। देव वन का अपना एक पारिस्थितिकीय तंत्र है, जहाँ पाँच धारायें निकलती है जिनसे इस क्षेत्र में वनस्पति के साथ–साथ पेयजल व सिंचाई के लिए पानी की आपूर्ति होती हे, जो आगे प्रवाहित होकर अलकनन्दा समाहित हो जाती है। इस देव वन की अपेक्षा पेड़–पौधों की संख्या निचले क्षेत्र में कम आंकलित की गयी है जिसमें चीड़ वृक्ष काफी बहुतायत में है। इस क्षेत्र में मुख्यतः बुरांस, बांझ, सौड प्रजातियाँ पायी जाती हैं।

वन्यजीव सम्पदा की दृष्टि से यहाँ मुख्यतः हिरन, भालू, लेपार्ड, जंगली पक्षियाँ इत्यादि बहुतायत में पायी जाती है जिनका शिकार करना प्रतिबन्धित है। संरक्षण की महत्ता को देखते हुए पारम्परिक

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समुदाय सांस्कृतिक क्रियाकलापों के तहत वैज्ञानिक तथ्य को साबित करते हैं जो इसके सतत् विकास के लिए अति आवश्यक है। आज बढ़ती हुई जनसंख्या तथा सीमित प्राकृतिक संसाधनों को मध्य नजर रखते हुए हमें इस तरह के पारम्परिक तौर–तरीकों को सतत् रूप में जीवन्त रखना होगा जिससें प्रकृति का सौन्दर्य एवं अस्तित्व बचा रहे।

हरियाली देवी पवित्र भूस्थल का एक परिदृ"यः–

हरियाली एक पवित्र भूस्थल है जो कि गढ़वाल हिमालय में दो निकटस्थ पहाड़ी ढ़ालों में लगभग 5.5 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है और एक स्थानीय देवी हरियाली देवी को समर्पित है। यह भारतीय उपमहाद्वीप की बहुत बड़ी आबादी द्वारा गढ़वाल हिमालय के पवित्र भूस्थल से जुड़ी वि" ाल गंगा नदी प्रणाली से जुड़ा हुआ माना जाता है।

वन परितंत्रो से जुड़ी पारम्परिक कृशि प्रणालियों वाले इस भूस्थल में तीन प्रकार के वन पाये जाते है जैसे अ– चौड़ी पत्ती वाले बांज बाहुल्य वन, ब– मिश्रित बांज–चीड़ वन तथा स– चीड़ वन।

चौड़ी पत्ती वाले बांज वन, वन विभाग के अर्न्तगत सुरक्षित वन हैं किन्तु हरियाली देवी को समर्पित होने से स्थानीय समुदाय से भी वन को अतिरिक्त सुरक्षा प्राप्त है। किन्तु दूसरी ओर चीड़ वन है जहाँ चराने, चारा, ईधन एकत्र करने की पूरी छूट है। मिश्रत बांज–चीड़ वन सिविल वन है जिस पर किसी व्यक्ति का अधिकार नहीं है, केवल संसाधनों का उपयोग करने की छूट है, जिसे ग्राम पंचायत सुनिश्चित करती है।

उपयोग करने से सम्बद्ध ये प्रतिबन्द उस समझौते के तहत है जिसे समाज में भूमि उपयोग को ध्यान में रखकर किया हैं, जिसमें समुदाय की आवश्यकताओं को भूस्थल से जुड़ी सांस्कृतिक/दार्शनिक परम्पराओं से समझौता किया जाता है। यथा हरियाली देवी को समर्पित भूमि, जिनके सम्मान में वर्शभर मेले तथा उत्सव आयोजित किये जाते हैं। ग्रामीण भूस्थल में सामाजिक वानिकी के भविश्य की आशा की किरण यहीं दिखती हैं।

तालिका–1 गढ़वाल हिमालय के हरियाली पवित्र वन का मृदा–सामाजिक विशेशतायें

प्रजाति	घनत्व/हेक्टेयर	कुल बसल कवर ($मी^2$/हे0)	आई0वी0आई0
अलन्स नेपालेन्सिस	9.00	0.044	3.366
बेटूला एल्नोइड	200.00	1.160	27.257
आइलेक्स	36.00	0.252	10.996
ल्योनिआ ओवेलिफोलिआ	145.00	1.300	20.989
पाइरस पशिया	9.00	0.056	3.391
क्वेरसेरक्स ल्यूकोट्राइकोफोरा	182.00	5.127	36.939
कवेरसेरक्स सेमीकारपीफोलिआ	300.00	23.76	95.054
रोडोडेन्ड्रोन आर्बोरियम	509.00	15.57	98.048
लौरेसी मेम्बर	9.00	0.321	3.948
कुल	1399.00	47.59	

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्रोत :– गढ़वाल हिमालय में पवित्र भूदृ" य, सिन्हा, वी0 2000, इकोलॉजी एनालेसस ऑफ आ सक्रेड लेडस्केप इन गढ़वाल हिमालय, पी0एच0डी0 थीसिस, जे0एन0यू0, न्यू देहली।

तालिका – 2 गढ़वाल हिमालय के हरियाली गैर पवित्र वन का मृदा–सामाजिक विशेषतायें

प्रजाति	घनत्व/हेक्टेयर	कुल बसल कवर ($मी^2$/हे0)	आई0वी0आई0
अलन्स नेपालेन्सिस	8.00	0.050	3.515
बेटूला एल्नोइड	16.00	0.092	4.37
कोटोनस्टर	16.00	0.086	4.348
ल्योनिआ ओवेलिफोलिआ	58.00	0.614	17.881
मायरिका एस्कुलेन्टा	16.00	0.344	7.940
पाइरस रोक्सबर्घाइ	83.00	11.33	62.568
पाइरस पशिया	16.00	0.107	7.058
क्वेरसेरक्स ल्यूकोट्राइकोफोरा	541.00	7.389	103.73
कवेरसेरक्स सेमीकारपीफोलिआ	16.00	0.179	7.326
रोडोडेन्ड्रोन आर्बोरियम	333.00	6.381	68.641
लौरेसी मेम्बर	8.00	0.123	3.786
कुल	1144.00	26.877	

स्रोत :– कृषि वानिकी तथा भूदृ" य विषमांगता, रामाकृष्णन, जी0एस0 2001 इकोलोजी एण्ड सस्टेनेबल डेवलपमेन्ट, ने" ानल बुक ट्रस्ट, 198 पृष्ठ।

तालिका – 2 गढ़वाल हिमालय की पवित्र प्रजातियों के उपयोग व धार्मिक–सांस्कृतिक मूल्य

प्रजाति	स्थानीय नाम	सामग्री उपयोगी	धार्मिक–सांस्कृतिक मूल्य
पाइरस रोक्सबर्घाइ	क्ले	ईंधन, इमारती लकड़ी खाद	शादी विवाह के अवसर पर
फाइक्स रिलिजिओसा	पीपल	चारा	मन्दिर परिसर में रोपण
एगल मारमेलोज	बेल	खाद्य फल	भगवान शिव को अर्पण
फाइक्स बेन्गालेसिस	बर	–	नये चाँद के दिन पूजा हेतु
आपुंचिया	नागपानी	खाद्य फल	भूत–प्रेत से सुरक्षा में
यूफोर्बिया रोयलिना	सुल्लु	घेरबाड़	भूत–प्रेत से सुरक्षा में
जेन्थोजाइलम	टीमरू	दन्त मंजन, मसाले	भूत–प्रेत से सुरक्षा में
डेंड्रोकेलेम्स हेमिलटोनी	बाँस	भवन सामग्री, हस्त" ाल्प	मृत भारीर की अर्थी बनाने में
जिजिफस न्यूमूलेसिस	बेर	खाद्य फल	भगवान शिव को अर्पण
धतूरा स्ट्रेमोनियम	धतूरा	अफीम	भगवान शिव को अर्पण
केन्नबस सटाइवा	भांग	खाद्य बीज, रेसा	भगवान शिव को अर्पण
ओसिमम सेन्क्टम	तुलसी	–	देवी की पूजा में
सीरामुरा इन्डिकम	थ्तल	तेल, औषधीय	भगवान को जल अर्पण हेतु चपाती/पूड़ी
अमरेंथस्	मार्छा	खाद्य अनाज	भगवान गणेश को अर्पण
फेगोपाइरम टाटारिकम	फाफर	आटा	देवी की पूजा में अर्पण हेतु चपाती/पूड़ी
साइनोडोन डेक्टाइलोन	दूब	चरा, औषधीय	भगवान को जल अर्पण में
सक्लेरम	बबला	चारा, थचिंग	अर्पण के लिए पानी के बर्तन को भाुद्ध करने हेतु रस्सी बनाने में
प्रुन्स सेरासोइड्स	पाया	ईंधन	पत्तियां व लकड़ी का पवित्र भावदाह में
सिड्रेला तुना	तुन	इमारती लकड़ी	मन्दिर परिसर में रोपण

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बेहिनिया	मालू	चारा, ईंधन	मन्दिर परिसर में रोपण
क्वेरकस	बाँज	चारा, ईंधन, इमारती लकड़ी	मन्दिर परिसर में रोपण

स्रोत :– गढ़वाल हिमालय में पवित्र भूदृ" य, (सिन्हा वी0 इकोलॉजिकल एनालिसिस ऑफ इ सकेरेड लैन्डस्केप इन गढ़वाल हिमालय पीएच0डी0 थीसिस, जे0एन0 विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

अभी भी वैज्ञानिक समुदाय का एक बड़ा भाग सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्रियाकलापों द्वारा जैवविविधता एवं जंगलों के संरक्षण की महत्ता में मान्यता प्रदान करने से हिचकता है किन्तु विकासात्मक दृश्टिकोण से किसी भी सामाजिक पारिस्थितिक स्थिति के लिए उपयुक्त पर्यावरणीय प्रौद्योगिक के विकास के लिए पारस्परिक ज्ञान या सांस्कृतिक–धार्मिक क्रियाकलाप को समुचित रूप में प्रभावी ढंग से औपचारिक ज्ञान से जोड़ना अति महत्वपूर्ण है। औपचारिक ज्ञान किसी एक विधि द्वारा उत्पन्न ज्ञान की सार्वभौमिकता पर बल देता है। जबकि हमारे पूर्वजों से प्राप्त सांस्कृतिक–धार्मिक ज्ञान में स्थानीयता के साथ सामाजिक उत्थान पर बल देने वाला सुदृण मानवीय तत्व रहता है हमें उन तरीकों को निकालना होगा जिसे प्रकृति तथा मनुश्यों के बीच सम्बन्ध पुनः स्थापित हो सके। हमें अपने जैवविविधता अपने जंगलों को बचाने के लिए स्थानीय स्तर पर प्रासंगिक तकनीकी को सृजित करना होगा। पर्यावरण को सुरक्षित एवं संरक्षित रखकर उसे अपनी आने वाली भावी पीढ़ी को सौंपना होगा। ताकि हर नया प्राणी एक स्वास्थ्यपूर्ण और सम्पन्न भूमण्डल में कदम रखे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गाडगिल एम0 और वी0डी0 वारतक, द सकेरडे आँफ वेस्टन घाटस इकोनोमिक वोटनी 30 : 152 – 160, 1976।

मैखुरी रमा, पर्यावरण संरक्षण में मानवीय मूल्यों का योगदान, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0इ0आर0टी0 नई दिल्ली, जुलाई, 3603 पृ0 3–8।

मैखुरी रमा, सिन्हा वी0 मैखुरी आर0के0 रिलीजियन एण्ड इन्प्रिचुअल वैल्यूज रिलैटेड टू कन्जरवेशन ऑफ नेचुरल रिर्सोसिज, केस ऑफ हरियाली सेवुड, साइड इन गढ़वाल हिमालय उत्तराखण्ड ऐसिड बुक रिलीजो, कल्चर प्लूरलरी एण्ड नेशन स्टेट पब्लिकेशन, श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड पृश्ठ 99–106, 2004।

रामाकृश्णन् पी0एस0, सक्सेना के0जी0 एण्ड चन्द्रशेखरा यू0एम0 (ऐडीशन) 1998, कन्जर्विंग द सकेरेड फॉर बायोडाईवरसिटी मैनेजमेन्ट, यूनेस्को ऑक्सफोर्ड एण्ड आई0बी0एच0 पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 480 पी0पी0।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies